Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA mf

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- rv6rv64c8g

CONCEPT

संप्रत्यय एक प्रतीक है, जिससे वस्तुओं की सामान्य विशेषताओं का बोध होता है। बालक जब अपने परिवार के लोगों को एक पक्षी को “कोआ” कहते हुए बार-बार सुनता है तो वह उस पक्षी के समान विशेषता वाले पंछी को भी कोआ ही कहने लगता है। इस तरह वह बालक कौवा के संप्रत्यय को सीख जाता है। संप्रत्यय की परिभाषा देते हुए **सैन्फोर्ड**(1961) ने कहा है कि-

“ भिन्न-भिन्न उद्दीपनों की समान विशेषता के प्रति सीखी गई प्रतिक्रिया को संप्रत्यय कहते हैं”।

“Concept is a learning response to a common property of a stimuly.”

संप्रत्यय वास्तव में एक चयनात्मक तंत्र है, जिसमें व्यक्ति उपस्थित उद्दीपन तथा पूर्व अनुभव के बीच संबंध स्थापित करता है। बालक में कोआ से संबंधित पूर्व अनुभव पहले से है। जब वह किसी स्थान पर दूसरे कौवा को देखता है तो वह इसका संबंध अपने पूर्व अनुभव के साथ जोड़ देता है और कहता है कि यह कौवा है। यदि वह मैना को देखता है तो अपने पूर्व अनुभव के साथ इसका संबंध नहीं जोड़ पाता है और वह समझने लगता है कि यह कौवा नहीं है। इससे पता चलता है कि संप्रत्यय वस्तुतः व्यक्ति के मानसिक संगठन में घटित होने वाली एक चयनात्मक तंत्र है।

विनाके(1952) के शब्दों में-

"संप्रत्यय व्यक्ति के मानसिक संगठन में एक प्रकार का चयनात्मक तंत्र है जो पूर्व अनुभव तथा वर्तमान उद्दीपन में एक संबंध स्थापित कर देता है"।

"A concept may be regarded as a kind of selective system in the mental organization of a person which links previous experience and current state with stimulus objects."

मोरिस(1976)ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि-

T" सामान्य तत्वों के आधार पर विशिष्ट व्यक्तियों, वस्तुओं अथवा घटनाओं को विभाजित करने हेतु मौलिक श्रेणियों को संप्रत्यय कहते हैं"।

"Concepts are basically categories for classifying specific people, things, or events on the basis of common elements."

बैरोन(2003) ने भी इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि-

“Concept is a mental category for objects or events that are similar to one another in certain ways.”

संप्रत्यय की विशेषताएँ-

प्रत्यय का बड़ी भाषाओं का विश्लेषण करने पर इसके कई विशेषताओं का पता चलता है यहां हम इसकी कुछ विशेषताओं का उल्लेख करने जा रहे हैं ताकि इसके स्वरूप को समझने में आसानी हो सके-

1. संप्रत्यय प्रत्यक्ष संवेदी सामग्री नहीं है, बल्कि संवेदी सामग्रियों के विस्तारण तथा संयोजन का परिणाम है।
2. संप्रत्यय प्राणी के पूर्व अनुभव पर आधारित होती है। यह प्रत्यय की प्रथम मुख्य विशेषता है।
3. संप्रत्यय एक चयनात्मक तंत्र है, जो भिन्न-भिन्न संवेदी अनुभवों के बीच संबंध स्थापित करता है। यह तंत्र व्यक्ति के एक विशेष मानसिक संगठन की उपज है। एक व्यक्ति विभिन्न उद्दीपन के प्रति एक ही तरह से व्यवहार करता है।

4. प्राणी की आंतरिक प्रक्रियाओं की दृष्टि से संप्रत्यय का संबंध चयनात्मक कारको से है। बाह्य उद्दीपन से प्रतीकात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है, जो संज्ञानात्मक क्रिया का मार्गदर्शन करती है।
5. संप्रत्यय का संबंध प्रतीकात्मक स्वरूप का होता है।भिन्न-भिन्न उद्दीपन ओ से एक ही संप्रत्यय की उत्पत्ति हो सकती है। मनुष्य में यह प्रतीकात्मक कार्य शब्दों द्वारा होता है शब्द को संप्रत्यय कहना गलत है। भाषा वास्तव में आंतरिक संज्ञानात्मक तंत्र का मात्र लेबल है और यह तंत्र वास्तव में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से संप्रत्यय है।